सम्पादकीय : गुरुचेतना के स्पर्श से प्रखर और प्राणवान बने हमारी जीवन साधना 2

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी 3

देवभूमि भारत के 15% युवाओं का नशाग्रस्त होना दुर्भाग्यपूर्ण है। - डॉ. चिन्मय जी 7

सक्रिय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सत्र उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब के 2000 कार्यकर्त्ताओं की भागीदारी 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

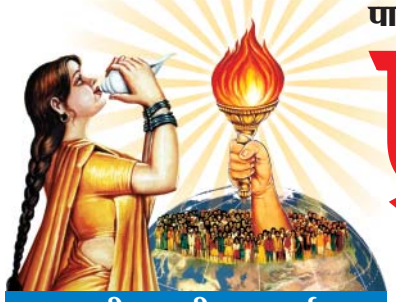

नारी सशक्तीकरण वर्ष

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अक्टूबर 2023

वर्ष : 36, अंक : 08

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 अक्टूबर 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

जीवन ही प्रत्यक्ष देवता है

उपासनात्मक विधि-विधान का सम्पूर्ण प्रयोजन जीवन को सद्गुणी, सुसंस्कृत, श्रेष्ठ बनाना ही है

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय खण्ड-5 'साधना से सिद्धि-1', (पृष्ठ 1.1 से 1.7) से संकलित-सम्पादित

अंतःकरण को जगमगायें

जीवन कल्पवृक्ष की तरह असंख्यों सत्परिणामों से भरा-पूरा है, पर उसका लाभ मिलता तभी है, जब उसे ठीक तरह साधा, सँभाला जाये। इस क्षेत्र की सुव्यवस्था के लिये की गयी चेष्टा को 'साधना' कहते हैं। साधना का अर्थ है अपने आप को साधना।

कितने ही देवी-देवताओं की साधना की जाती है और उससे कतिपय वरदान पाने की बात पर विश्वास किया जाता है। इस मान्यता के पीछे सत्य और तथ्य इतना ही है कि इस मार्ग पर चलते हुए अन्तः क्षेत्र की श्रद्धा को विकसित किया जाता है। जिन देवी-देवताओं की साधना की जाती है, वस्तुतः वे अपनी ही विभूतियाँ एवं सत्प्रवृत्तियाँ हैं। यह साधना व्यक्तित्व पर चढ़ी हुई दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण करने तथा सत्प्रवृत्तियों को स्वभाव का अंग बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

साधना का क्षेत्र अन्तः जगत है। अपने ही भीतर इतने खजाने दबे-गढ़े हैं कि उन्हें उखाड़ लेने पर कुबेर जितना सुसम्पन्न बना जा सकता है, फिर किसी बाहर वाले से माँगने या याचना करने की दीनता दिखाकर आत्मसम्मान क्यों गँवाया जाये? भीतर की विशिष्ट क्षमताओं को ही तत्त्वदर्शियों ने देवी-देवता माना है और बाह्योपचारों के माध्यम से अन्तः संस्थान के भाण्डागार को करतलगत करने का विधि-विधान बताया है। शारीरिक बल वृद्धि के लिये डम्बल, मुद्गर उठाने, घुमाने जैसे कर्मकाण्ड करने पड़ते हैं, पर बल इन उपकरणों में कहाँ होता है? वह तो शरीर की माँसपेशियों से उभरता है। इस उभार में व्यायामशाला के साधन-प्रसाधन सहायता भर करते हैं, उनसे मिलता कुछ नहीं। जो मिलता है, वह भीतर से ही मिलता है।

ठीक यही बात आत्मसाधना के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। व्यायामशाला में नित नये उत्साह के साथ जूझते रहने वाले पहलवान की मनःस्थिति और गतिविधि का यदि गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया जाये तो आत्मसाधना के विद्यार्थी को विदित हो सकता है कि उसे आखिर करना क्या पड़ेगा? पहलवान मात्र कसरत करके ही निश्चिन्त नहीं हो जाता, वरन् पौष्टिक भोजन की, संयम की, ब्रह्मचर्य की, तेल मालिश की, उपयुक्त दिनचर्या की, प्रसन्नता-निश्चिन्तता की भी व्यवस्था करता है। एकाकी कसरत से कुछ भला न हो सकेगा। उसी प्रकार उपासनात्मक विधि-विधान की अपनी महत्ता है, पर उतने भर से काम नहीं चलता। चिन्तन और कर्तृत्व की रीति-नीति भी लक्ष्य के अनुरूप ही ढालनी पड़ेगी।

सूक्ष्म का शोधन और पोषण

शरीर को जीवित और सुसंचालित रखने के लिये दो कार्य आवश्यक हैं-एक भोजन, दूसरा मल त्याग। भोजन न किया जाये, तो पोषण के लिये नितान्त आवश्यक रस-रक्त की नयी उत्पत्ति न होगी और पुराने संचित रक्त की पूँजी समाप्त होते ही काया दुर्बल होकर मृत्यु के मुख में चली जायेगी। इसी प्रकार मल त्याग न करने पर नित्य उत्पन्न होने वाले विष जमा होते और बढ़ते चले जायेंगे और उनका विस्फोट अनेक उपद्रवों के रूप में प्रकट होकर कष्टकारक मृत्यु का आधार बनेगा।

पंच भौतिक शरीर की तरह सूक्ष्म शरीर की दिव्य चेतना की कुछ आवश्यकतायें हैं। उसे भी भूख लगती है। उस पर भी मैल चढ़ते हैं और सफाई की आवश्यकता पड़ती है, इन दोनों प्रयोजनों को पूरा करने वाली प्रक्रिया साधना कही जाती है। उससे सत्प्रवृत्तियों को जगाकर वह सब उगाया, पकाया जा सकता है, जिससे आत्मा की भूख बुझती है और जीवनभूमि में हरी-भरी फसल लहलहाती है। साधना से उन मलीनताओं, मनोविकारों का निष्कासन होता है, जो प्रगति के हर क्षेत्र में चट्टान बनकर अड़े रहते हैं और पग-पग पर व्यवधान उत्पन्न करते रहते हैं। साधना में प्रयुक्त होने वाली आत्मशोधन और आत्मनिर्माण की उभय पक्षीय प्रक्रिया अन्तःश्रेत्र में धँसे-फँसे कुसंस्कारों को उखाड़ कर उनकी जगह आम्र-वृक्ष लगाती है।

साधना का प्रभाव

संसार में जितने भी चमत्कारी देवता जाने माने गये हैं, उनमें सबसे बढ़कर 'आत्मदेव' हैं। उसकी साधना प्रत्यक्ष है। नकद धर्म की तरह उसकी उपासना कभी भी, किसी की भी निष्फल नहीं जाती। यदि उद्देश्य समझते हुए सही दृष्टिकोण अपनाया जा सके तो आत्मदेव की साधना को अमृत, पारस और कल्पवृक्ष की, कामधेनु की सार्थक उपमा दी जा सकती है। साधना लेने से सामान्य स्तर के प्राणी आश्चर्यजनक कार्य करके दिखाते हैं। वन गायें मनुष्य को पास भी नहीं आने देतीं और खेत को उजाड़ कर रख जाती हैं, पर जब वे पालतू हो जाती हैं तो दूध, बछड़े, गोबर आदि बहुत कुछ देती हैं। वे स्वयं सुखी रहती हैं और उसके पालने वाले भी लाभान्वित होते हैं। यही बात अन्य वन्य पशुओं के बारे में भी लागू होती है।

अपने भीतर शरीर तथा मनःक्षेत्र में भी एक से बढ़कर एक शक्तिशाली धारायें प्रवाहित होती हैं। वे निरुद्देश्य और अनियन्त्रित स्थिति में रहकर वन्य पशुओं जैसी असंगत बनी रहती हैं। फलतः विकृत होकर वे सड़ी दुर्गन्ध की तरह अपने समूचे प्रभाव क्षेत्र को विषैला बना देती हैं।

साधना जीवन के बहिरंग और अन्तरंग क्षेत्रों में सुसंस्कारित सुव्यवस्था उत्पन्न करने का नाम है। इसे समझ पाने और कर पाने का प्रतिफल, जंगली जानवरों को पकड़ कर पालतू बनाने की कला में प्रवीण व्यवसायियों जैसा ही प्राप्त होता है। यदि अपने आप को साधा जाये, व्यक्तित्व को खरादा जाये तो वह सब कुछ प्रचुर परिमाण में अपने ही घर पाया जा सकता है, जिसकी तलाश में जहाँ-तहाँ मारे-मारे फिरना और मृगतृष्णा की तरह निराश भटकना पड़ता है। शरीरगत क्रियाशीलता, मनोगत विचारणा और अन्तरात्मा की भाव-संवेदना का स्तर किस प्रकार ऊँचा उठाया जा सकता है और किस तरह पशुता को देवत्व में परिणत किया जा सकता है, इसी विद्या का नाम साधना है। अपने आप की साधना करके कोई भी सिद्ध पुरुष बन सकता है।

सच्ची प्रगति की दिशाधारा

मनुष्य बहुत कुछ चाहता है। उसे अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन चाहिये। मन में उत्साह, उल्लास बनाये रखने वाली परिस्थितियों की आकांक्षा रहती है, कौन नहीं चाहता कि पैसे की तंगी रहे। पत्नी का प्यार पाने की उत्सुकता किसे नहीं है ? मित्रों का सम्मान एवं सहयोग किसे अपेक्षित नहीं है। ऐसी-ऐसी अन्यान्य बातें भी हैं, जिन्हें हर व्यक्ति चाहता है।

यदि जीवन साधना की गरिमा पर विश्वास किया जा सके, तो समझना चाहिये कि अध्यात्मशास्त्र में जिस 'श्रद्धा तत्व' को सर्वोपरि बताया गया है, उसका शुभारम्भ बन पड़ा। देवता भीतर से उगते हैं। सामने तो वे खड़े भर दीखते हैं। मनःस्थिति अदृश्य है, आन्तरिक है, परिस्थिति उसकी दृश्यमान परिणति है। विषाक्तता रक्त में रहती है, व्रण, अर्बुदों के रूप में तो वह फूटती भर है। पेड़ के पल्लव, फल-फूल ऊपर आसमान से नहीं टपकते, वे दृष्टि से ओझल रहने वाली जड़ों द्वारा रस-रूप में सींचे जाते हैं। विभूतियाँ अन्तर में से निकलती हैं। उन्हें किसी देवी-देवता, मन्त्र-तन्त्र का अनुदान कहा जाये तो इसमें विनयशीलता और कृतज्ञता तो है, किन्तु यथार्थता नहीं। क्योंकि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि कुपात्रता के रहते किसी दैवी शक्ति ने मात्र पूजा-पत्री से प्रसन्न होकर किसी के साथ पक्षपात किया हो और पात्रता से अधिक अनुपात में अनुग्रह उड़ेला हो।

प्रवाह में न बहें, पात्रता बढ़ायें

लोक मान्यता यह है कि सिद्धियाँ देव अनुग्रह से बरसती हैं। साधना उसी की मनुहार है। यह मान्यता आंशिक रूप से ही सत्य है। दुकानदार माँगने से ही कोई वस्तु निकाल कर दिखाता और देता है। न माँगने पर तो वह देना तो दूर, बताएगा तक नहीं। उसी प्रकार प्रार्थना को अपनी आवश्यकता की अभिव्यक्ति कह सकते हैं। इस अर्थ में वह उचित भी है और आवश्यक भी। भूल वहाँ होती है जब प्रार्थना को याचना समझा जाता है। याचना का अर्थ है बिना मूल्य या अल्प मूल्य में कुछ बहुमूल्य पाने के लिए गिड़गिड़ाना। इस उपाय से बहुत हल्के अनुदान ही प्राप्त होते देखे गये हैं। इतने पर भी वे न तो सन्तोषजनक होते हैं और न सम्मानास्पद। उनका उपयोग करते समय आत्मग्लानि भी होती है और बाहर से तिरस्कृत भी होना पड़ता है।

सृष्टा की समूची सृष्टि इसी व्यवस्था की धुरी पर परिभ्रमण करती है कि पात्रता प्रस्तुत करने वाले को अनुदान दिये जायें। पवन में प्राणवायु की प्रचुर मात्रा होती है, पर उसे सक्षम फेफड़े ही ग्रहण कर पाते हैं। पाने वाले को अतिरिक्त याचना नहीं करनी पड़ती, जो उपयुक्त है वह अनायास ही मिलता है। तात्पर्य है कि अपने स्तर को बढ़ाये बिना न तो विभूतियाँ मिलती हैं और न मिलने पर ठहरती ही हैं। अतएव पात्रता की, पाचन की समर्थता का अभिवर्द्धन अनिवार्य रूप से आवश्यक है। साधना में यही करना पड़ता है।

जीवन प्रत्यक्ष देवता है। उसकी साधना कर सकने वाले सुनिश्चित रूप से भौतिक सिद्धियाँ और आत्मिक ऋद्धियाँ उपलब्ध करते हैं। दूसरे भ्रमग्रस्त तो कल्पित देवी-देवताओं के सामने नाक रगड़ते, मनुहार करते, दाँत निपोरते और अन्ततः निराश होकर खीजते, अनास्था व्यक्त करते देखे जाते हैं। विवेकवानों को वास्तविकता ही वरण करनी चाहिये, भले ही वह कठोर या कष्ट साध्य ही क्यों न हो ?

गुरुचेतना के स्पर्श से प्रखर और प्राणवान बने हमारी जीवन साधना

दुनियाँ की चकाचौंध और देखा-देखी में कहीं हम अपने जीवन के दुर्लभ सौभाग्य को व्यर्थ ही न गँवा बैठें

युग निर्माणियों की विशिष्ट साधना

दोनों नवरात्रों को आध्यात्मिक साधनाओं के लिए सबसे उपयुक्त समय माना जाता है। यह साधना से सिद्धि की सर्वोत्तम अनुकूलता वाली वेला है। इन दिनों लोग तरह-तरह की मनोकामनाओं की सिद्धि के लिए पूजा-पाठ, साधना, अनुष्ठान करते हैं। साधकगण आत्मिक उत्थान, आधि-व्याधि निवारण, देवी-देवताओं की प्रसन्नता, भौतिक मनोकामनाओं की पूर्ति, मंत्र-तंत्र की सिद्धि, अलौकिक सामर्थ्य की वृद्धि जैसे अनेक प्रयोजनों के लिए तरह-तरह से जप, तप, अनुष्ठान करते हैं। लोकमंगल के महान प्रयोजन के लिए सामूहिक साधना अनुष्ठान भी इन दिनों किए जाते हैं। प्रायः हर साधक अपने पूजापाठ, अनुष्ठान के साथ सबके हित की कामना और लोकमंगल की भावना को जोड़ता ही है, लेकिन कुछ दिव्य और महान आत्माएँ ऐसी भी होती हैं, जो परमार्थ में ही स्वार्थ की सर्वोत्तम सिद्धि अनुभव करती हैं।

बात है युग निर्माणी विशिष्ट आत्माओं की। देश और दुनियाँ में करोड़ों लोग महाकाल के युग परिवर्तन के महान संकल्प के साथ जुड़े हुए हैं। उनका चिंतन, उनका युगधर्म तथा उनका जीवन लक्ष्य ही परमार्थपरायण है। वे पेट-प्रजनन तक सीमित रहने के लिए नहीं, नवयुग के निर्माण के महान संकल्प को पूरा करने में सहायता करने के लिए विशिष्ट समय में जन्मी विशिष्ट आत्माएँ हैं। यह वे दिव्य आत्माएँ हैं जो कभी रीछ-वानरों के रूप में, कभी ग्वाल-बाल के रूप में, कभी बुद्ध के परिव्राजक बनकर समाज की विकृतियों को दूर करते हुए मानवता को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने में विशिष्ट भूमिका निभाती रही हैं।

इन दिव्यात्माओं को परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी तथा युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की दिव्य चेतना उनके जन्म-जन्मांतरों के पुण्य के प्रताप से मिले सौभाग्य की बार-बार याद दिलाती रही है। उनके पास पुनः एक बार अनुपम अवसर है कि वे अपने सौभाग्य का वरण करें और अपना युगधर्म निभाकर जीवन के उस अलौकिक आत्मिक आनन्द को प्राप्त करें, जिसे स्वर्ग, मुक्ति जैसी उच्च स्तरीय आध्यात्मिक उपलब्धियाँ माना जाता है। युग परिवर्तन के विशिष्ट अवसर पर सहज ही मिलने वाली ये सिद्धियाँ ऐसी हैं, जिन्हें पाने के लिए ऋषि, मुनि प्रचण्ड तप किया करते हैं।

आवश्यकता स्वयं के सौभाग्य को पहचानने और दुनियाँ के भटकावों से बचकर जीवन साधना का सही पथ अपनाने की है। जिनके अंतःकरण में लोकमंगल के पुण्य पथ पर चल पड़ने की उमंगें हिलोरें ले रही हों, युग परिवर्तन के महान प्रयोजन के लिए अवतरित उन विशिष्ट आत्माओं को यह आत्मबोध करने की आवश्यकता है कि वे नन्हें-नन्हें दीपकों की तरह सूरज की सहयोगी बनकर अंधकार को चुनौती देने के लिए धरती पर आई हैं। उनका युगधर्म सूरज की तरह ही जलकर दुनिया में प्रकाश फैलाना है।

इस विशिष्ट काल में जन्मे विशिष्ट लोगों की युग साधना कैसी हो? यदि यह जानना हो तो उन्हें दीपक से प्रेरणा लेनी चाहिए। दीपक तब तक जलता है, जब तक उसमें स्निग्धता रहती है, बाती के माध्यम से उस स्निग्धता को अवशोषित करने की क्षमता होती है। वह तभी तक जलता है, जब तक वह स्वयं को हवा के झोकों से बचाए रखने में समर्थ होता है।

आज आवश्यकता परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाकर पतनोन्मुख मानवता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाले, हताश-निराश लोगों में नवप्राणों का संचार करने वाले जीवन-दीपों की है। प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी के स्नेहानुदान ऐसे अनन्त दीपकों को प्रकाशित करने के लिए प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। आवश्यकता उन्हें धारण करने वाली पात्रता के विकास की है। उन अनुदानों को अवशोषित करने वाले संकल्प, साहस और सक्रियता की बाती की है। आवश्यकता सांसारिक आकर्षण और अवरोधों के झंझावातों से स्वयं को सुरक्षित रखकर सतत जलते रहने के संकल्प की है।

नवरात्र साधना का विधि-विधान कोई भी हो, उसके माध्यम से हमें आत्मबोध का प्रयास अवश्य करना चाहिए, मानवता का धर्म समझने का प्रयास होना चाहिए, अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत-परिमार्जित करने की साधना की ही जानी चाहिए, ताकि अपनी गुरुसत्ता और ईश्वर द्वारा प्रदत्त अनुदान-वरदानों को धारण करने की पात्रता विकसित होती रहे। अपनी गुरुसत्ता पर अटूट श्रद्धा और अकूत विश्वास ही वह बल है, जो प्रचण्ड सांसारिक झंझावातों से हमें बचाए रखकर श्रेयपथ की ओर अग्रसर होते हुए जीवन को सार्थक, सफल बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह श्रद्धा और विश्वास का बल परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के जीवन पथ का अनुसरण करने और उनकी प्रेरणाओं को निरंतर हृदयंगम करते रहने से मिलता है। अपनी उपासना, साधना में अपने इष्ट के आदर्शों के स्मरण और उन्हें धारण करने के प्रयास किए ही जाने चाहिए।

समर्थ उत्तराधिकारियों की खोज

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा मथुरा से विदाई के पूर्व लिखे गए आलेख वाङ्मय क्रमांक 1 (युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन) में संग्रहित है। उसके अध्याय 4 में पृष्ठ 2 और 3 से संकलित कुछ अंश देखें, जिनका पठन, चिंतन, मनन निःसंदेह युग साधकों को, उनकी जीवन साधना को अभीष्ट दिशा प्रदान करने में समर्थ है। वे लिखते हैं-

वेशकीमती विरासत सँभालें

"इस भीड़-भाड़ में से हम ऐसे लोगों को तलाश करने में लगे हुए हैं, जो हमारे सच्चे आत्मीय साथी एवं कुटुंबी के रूप में अपनी निष्ठा का परिचय दे सकें।... हमने जो पाया है, वही हम अपने उत्तराधिकारियों के लिए छोड़ कर जाना चाहते हैं।... कोई भौतिक धन-दौलत पास में होती तो 'अखण्ड ज्योति' परिवार का हर सदस्य अपने को हमारा सच्चा अनुयायी एवं शिष्य बताता और खुशी मनाता, पर जो चीज मिलने वाली है वह आध्यात्मिक है, प्रत्यक्ष दिखाई नहीं पड़ती।...

हमें जिस महान परंपरा का उत्तराधिकार मिला है, वह ऐसा ही है जिसमें तृष्णा-वासना की पूर्ति जैसा कुछ नहीं है। श्रम और झंझट बहुत है, फिर भी गंभीरतापूर्वक देखने से यह प्रतीत होता है कि जो लोग सारी जिंदगी धन तथा भोग के लिए पिसते-पिलते रहने के पश्चात जो पाते हैं, उससे हमारी उपलब्धियाँ किसी प्रकार कम नहीं हैं। अमीरों जैसे ठाठ नहीं बन सके, पर जो कुछ मिल सका है, वह उतना बड़ा है कि उस पर पहाड़ों जैसी अमीरी निछावर की जा सकती है। सामान्य बुद्धि इस उपलब्धि का मूल्यांकन नहीं कर पाती, पर जो थोड़ी गंभीरता से समझ और देख सकता है, वह यह विश्वास करेगा ही कि अमीरी की तुलना में यह आध्यात्मिक उपलब्धियाँ भी कम महत्त्व की, कम मूल्य की नहीं हैं।...

महानता की कसौटी

आध्यात्मिक महानता की, सत्पात्रता की कसौटी के संबंध में हम इस तथ्य को अनेक बार प्रस्तुत कर चुके हैं कि व्यक्ति के गुण, कर्म व स्वभाव का उत्कृष्ट होना ही उसकी आंतरिक महानता का परिचायक है। इसी आधार पर संसार में, इसी आधार पर परलोक में और इसी आधार पर ईश्वर के समक्ष किसी का वजन एवं मूल्य बढ़ता है। अपने दैनिक जीवन में हम कितने संयमी, सदाचारी, शांत, मधुर, व्यवस्थित, परिश्रमी, पवित्र, संतुलित, शिष्ट, कृतज्ञ एवं उदार हैं, इन सद्गुणों का दैनिक जीवन में कितना अधिक प्रयोग करते हैं, यह देख-समझकर ही किसी को, उसकी आंतरिक वस्तुस्थिति को जाना जा सकता है। जिसका दैनिक जीवन फूहड़पन से भरा हुआ है, वह कितना ही जप, ध्यान, पाठ, स्नान करता हो, आध्यात्मिक स्तर की कसौटी पर ठूँठ या छूँछ ही समझा जाएगा।

महान आत्मा, महात्मा वह है जो विराट ब्रह्म की, विश्वमानव की सेवा में अपनी क्षमता एवं प्रतिभा की श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नतमस्तक होता है। अक्षत, चंदन, पुष्प, धूप-दीप तो पूजा के प्रतीक मात्र हैं, असली पूजा तो लोकमंगल के लिए किए गए उदार सत्प्रयत्नों से ही आँकी जाती है। जो कृपण परमार्थ का महत्त्व न समझ सका, लोकमंगल के लिए जिसने कुछ भी त्याग कर सकने की हिम्मत न की, ऐसा अभागा व्यक्ति भावना की दृष्टि से पक्का नास्तिक है; फिर चाहे उसके तिलक और केश कितने ही लंबे क्यों न हों। ईश्वरभक्त आस्तिक को लोकसेवी होना ही चाहिए। जिसके हृदय में अध्यात्म की करुणा जगेगी, वह सेवाधर्म अपनाए बिना रह ही न सकेगा।... माला घुमाने की कीमत पर न तो ईश्वर मिल सकता है, न आत्मा। कर्मकांड तो उपासना का कलेवर है, उसका प्राण तो भावनात्मक उत्कर्ष के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

पात्रता की कसौटी

उत्तराधिकारियों की पात्रता की परख के लिए दो छोटे कार्यक्रम स्वजनों के सामने प्रस्तुत किए गए थे और देखा गया था कि किसमें कितनी वास्तविकता है? (1) एक घंटा प्रतिदिन जनजागरण के लिए देते रहना (2) दस पैसा प्रतिदिन इसी ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित करना। ये दोनों इतने सरल हैं कि जिनमें रत्तीभर भी सद्भावना जग पड़ी होगी, उन्हें इसमें तनिक भी कठिनाई अनुभव न होगी। जिनकी रुचि इस ओर नहीं, उनके लिए हजार बहाने गढ़ लेना बाएँ हाथ का खेल है। उत्तराधिकारियों की रुचि आत्मनिर्माण की, धर्म-साधना की दिशा में जगी या नहीं, हमारे अनुरोध का कुछ मूल्य समझा या नहीं, इसकी पहचान इस तरह सहज ही हो सकती है कि उपर्युक्त दो छोटे-से प्रयोग आरंभ कर दिए या नहीं।"

आज का युगधर्म : अंशदान, समयदान

कहते हैं कि भावों में भगवान बसते हैं। परम पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व उदात्त भावनाओं का सागर है। आज के समय में समयदान और अंशदान का महत्त्व समझना हो तो उनके हृदय-सागर की गहराइयों में गोते लगाकर मणि-मुक्तकों को खोजने की जरूरत है। वे वाङ्मय खण्ड 1 में लिखते हैं :-

"कोई हमारी चमड़ी उघाड़कर भीतर का अंतरंग परखने लगे तो उसे मांस और हड्डियों में एक तत्त्व उफनता दृष्टिगोचर होगा, वह है असीम प्रेम। हमने जीवन भर एक ही उपार्जन किया है-प्रेम। एक ही रस हमने चखा है और वह है प्रेम का।" (पृष्ठ 4.4)

"जिन्होंने समय-समय पर ममता भरा प्यार हमें दिया है, हमारी तुच्छता को भुलाकर जो आदर, सम्मान, श्रद्धा, सद्भाव, स्नेह एवं अपनत्व प्रदान किया है, उसके लिए क्या कुछ किया जाये, समझ में नहीं आता। इच्छा प्रबल है कि कोई अपना हृदय बादल जैसा बना दे कि जहाँ से एक बूँद स्नेह की मिली हो, वहाँ एक पहर वर्षा करने का अवसर मिल जाए। मालूम नहीं, ऐसा संभव होगा कि नहीं, यदि संभव न हो सके तो हमारी अभिव्यंजना उन सभी तक पहुँचे, जिनकी सद्भावना किसी रूप में हमें प्राप्त हुई हो। वे उदार सज्जन अनुभव करें कि उनके प्यार को भुलाया नहीं गया, वरन् उसे पूरी तरह स्मरण रखा गया।" (पृष्ठ 4.6)

"जिनकी आँखों में हमारे प्रति स्नेह और हृदय में भावनाएँ हैं, उन सबकी तस्वीरें हम अपने कलेजे में छिपाकर ले जाएँगे और उन देव प्रतिमाओं पर निरंतर आँसुओं का अर्घ्य चढ़ाया करेंगे। कह नहीं सकते, उऋण होने के लिए प्रत्युपकार का कुछ अवसर मिलेगा या नहीं, पर यदि मिला तो अपनी इन देव प्रतिमाओं को अलंकृत और सुसज्जित करने में कुछ उठा न रखेंगे । लोग हमें भूल सकते हैं, पर हम अपने किसी स्नेही को नहीं भूलेंगे।" (पृष्ठ 4.9)

परम पूज्य गुरुदेव के 'विचार' क्रान्ति की चिंगारी हैं। ये विचार जीवन का कायाकल्प करने में समर्थ हैं। लेकिन इन शुष्क विचारों को प्रेम और आत्मीयता की चाशनी में डुबोकर ही जनमन में तथा जनजीवन में सहजता से उतारा जा सकता है। इसी प्यार के सहारे हमारी गुरुसत्ता ने विराट देव परिवार बसाया है। प्यार! प्यार!! प्यार!!! यही देव परिवार के विस्तार का सुगम सूत्र है। परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं :-

"प्यार करना सीखने और सिखाने में सारी जिंदगी चली गई। यदि कोई धंधा किया है तो एक कि महँगी कीमत देकर प्यार खरीदना और सस्ते दाम पर उसे बेच देना।" (पृष्ठ 4.8)

नवयुग की स्थापना के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता जन-जन का भावनात्मक परिष्कार ही है। जिस प्रेमतत्त्व की साधना और वितरण के लिए पूज्य गुरुदेव ने अपनी जिंदगी का कण-कण और क्षण-क्षण अर्पित कर दिया, उसी के विस्तार के लिए पूज्य गुरुदेव द्वारा माँगे गए एक घण्टा प्रतिदिन समयदान और वर्तमान युग में न्यूनतम 1 से 5 रुपये प्रतिदिन अंशदान का व्रत हर जाग्रत् आत्मा को निभाना ही चाहिए। ध्यान रहे कि यह ऐसा कार्य है जिसे मात्र वर्तमान युग की इंटरनेट क्रांति से पूरा कर लेना कठिन है। इसके लिए प्रत्यक्ष जनसंपर्क की आवश्यकता होती ही है। परम पूज्य गुरुदेव ने अखण्ड ज्योति पत्रिका को घर-घर पहुँचाने, झोला पुस्तकालय चलाने जैसे कार्यों को अपनाते हुए अपना जनसंपर्क बढ़ाने और आत्मीयता विस्तार का महान अभियान चलाने का कार्य हमें सौंपा है।

समय की माँग है कि हम दुनिया की चकाचौंध में भ्रमित न हो जाएँ। अपने आराध्य देव परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी के जीवन-आदर्शों का अनुसरण करते हुए अपनी उपासना-साधना को प्राणवान बनायें। पूज्य गुरुदेव लिखते हैं :-

"उपासनाओं की सफलता तभी संभव है, जब इष्ट देव के साथ प्रेमभाव की भी चरम परिणति होती हो। केवल शारीरिक क्रिया की तरह मशीन जैसे कर्मकांड कुछ बहुत फल नहीं दे सकते। परमात्मा प्रेममय है और वह प्रेम से ही प्रभावित होता है। कर्मकांड तो उस प्रेम को बढ़ाने, उगाने के साधन भर का काम करते हैं।" (पृष्ठ 4.19)

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान में शान्तिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय की भागीदारी

आसपास की लगभग एक किलोमीटर की सड़कों की गंदगी हटाई, स्वच्छता के लिए जनजागरूकता अभियान चलाया

5000 परिजनों की भागीदारी

स्वच्छता-श्रमदान शान्तिकुञ्ज की दिनचर्या का नियमित क्रम है। गायत्री परिवार स्वच्छ, स्वस्थ, सुसंस्कृत, सभ्य, सुन्दर समाज निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। हर व्यक्ति को इस विचार को अपनी जीवन शैली का नियमित अंग बनाने के लिए लोगों को प्रेरित करता रहा है।

इस वर्ष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान चलाए जाने का आह्वान हुआ तो शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने असीम उत्साह के साथ इस अभियान को सफल बनाने में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया। लगभग 5000 की संख्या में शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता, स्वयंसेवक, विभिन्न साधना व प्रशिक्षण सत्रों में देश के कोने कोने से आये साधक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के समस्त आचार्य, अधिकारी, छात्र-छात्राएँ, एनसीसी, एनएसएस व स्काउट गाइड की इकाइयों व गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने स्वच्छता अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

श्रमदान में बहाया पसीना

शान्तिकुञ्ज के गेट नंबर तीन से लेकर गंगा घाट तक लगभग एक कि.मी. की सड़क को बुहारा गया तथा दोनों किनारों पर लम्बे समय से एकट्ठे हुए कूड़े करकट को समेट कर ट्रैक्टर ट्रॉलियों में भरकर निस्तारण के लिए उचित स्थान पर पहुँचाया गया। सैकड़ों स्वयंसेवकों ने ब्रह्मवर्चस के समक्ष गंगाजी के कई घाटों को झाड़ कर स्वच्छ किया।

जनजागरण के प्रयास हुए

स्वच्छता अभियान में जुटे परिजनों ने लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ाने के प्रशंसनीय प्रयास किए। सड़क के किनारे के दुकानदारों से संपर्क कर उन्हें संगठित होकर सप्ताह में कम से कम एक बार आसपास के क्षेत्र की सफाई करने की प्रेरणा दी। राहगीरों और पर्यटकों को भी तरह-तरह से प्रेरित किया। कुछ स्वयंसेवकों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से स्वच्छता के प्रति उत्साह जगाया, जो लोगों को बहुत रुचिकर लगा।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी तथा सुरक्षा विभाग प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में समग्र स्वच्छता अभियान सम्पन्न हुआ।

स्वच्छता आत्मिक प्रगति का अनिवार्य चरण है

"स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सभ्यता का ही नहीं, आत्मिक प्रगति का भी अनिवार्य चरण है। कोई भी आध्यात्मिक कर्मकाण्ड शारीरिक स्वच्छता और आंतरिक पवित्रता की प्रेरणा और संकल्प से ही आरंभ होता है। बाह्य जीवन में स्वच्छता-सुव्यवस्था के बिना आंतरिक प्रसन्नता संभव नहीं है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

वृक्षगंगा अभियान की सफलता में उत्कृष्ट योगदान दे रही है युवाशक्ति

पाँच वर्षों में 30 एकड़ भूमि में लगाए 1 लाख पेड़

अश्वमेध यज्ञ स्मृति उपवन

टिटवाला, मुम्बई। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार मुंबई द्वारा अश्वमेध उपवन टिटवाला में 1 लाख वृक्षारोपण का संकल्प दिनांक 20 अगस्त को 5550 पौधों के रोपण के साथ पूरा किया। गायत्री परिवार मुम्बई के समन्वयक श्री मनुभाई पटेल ने बताया कि यह ऐतिहासिक सफलता पिछले पाँच वर्षों से किए जा रहे अथक प्रयासों से संभव हो पाई है।

श्री मनुभाई ने बताया कि मुम्बई में अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न होने जा रहा है। इसमें समिधाओं की आवश्यकता होगी। गायत्री परिवार ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी को अनुभव करते हुए यज्ञ के लिए प्रकृति से जो सेवाएँ लेनी होंगी, उसकी तैयारी पाँच वर्ष पहले ही कर दी थी। महाराष्ट्र सरकार एवं वन विभाग ने गायत्री परिवार मुंबई को टिटवाला में वृक्षारोपण के लिए 30 एकड़ जमीन दी है।

गायत्री परिवार ने पिछले पाँच वर्षों में इस भूमि पर गड्ढे खोदना, जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए खाद डालना, सिंचाई के लिए पंप लगाना, चिड़ियों के लिए घोंसले लगाना जैसे काम किये हैं और लगाए गये पौधों का संरक्षण भी किया है।

टिटवाला में वृक्षारोपण करते ऊर्जावान युवा

जन आकर्षण का केन्द्र बनेगा श्रीराम स्मृति उपवन

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने किया उपवन का लोकार्पण

चांदो, डोंगरगाँव। छत्तीसगढ़

दिनांक 27 अगस्त 2023 के दिन गायत्री आश्रम चांदो में पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ नवनिर्मित श्रीराम स्मृति उपवन का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि, सांसद श्री संतोष पाण्डेय, विधायक श्री छन्नी साहू तथा छत्तीसगढ़ जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अध्यक्ष श्री नवाज खान, जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री गीता साहू की मुख्य उपस्थिति में प्रान्तीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी भी हुई, जिसमें गायत्री आश्रम चांदो को ग्राम विकास के आदर्श तीर्थ के रूप में विकसित करने पर भी चर्चा हुई।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि ने कहा कि चांदो आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से जनजागरण का केन्द्र बनेगा तथा पूरे प्रदेश के लिए ग्रामतीर्थ का एक आदर्श स्थापित करेगा। प्रथम चरण में श्रीराम स्मृति उपवन में विभिन्न आध्यात्मिक महत्त्व की वाटिकाएँ लगाई जा रही हैं। अगले चरण में क्रमशः गायत्री मंदिर सहित विभिन्न देवालयों के निर्माण और गौशाला-गुरुकुल की स्थापना की योजना है।

गायत्री आश्रम चांदो शिवनाथ नदी के तट पर बना है। कार्यक्रम के अंतिम चरण में काशी में गंगा आरती की तर्ज पर रंग-बिरंगी लाइट और साउंड सिस्टम के साथ शिवनाथ नदी की आरती की गई, नदी स्वच्छता और जल संरक्षण का संकल्प दोहराया गया।

आयोजन स्थल पर देर रात तक भजन संध्या का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ प्रांत की ओर से जोन समन्वयक सुश्री आदर्श वर्मा, प्रान्तीय युवा समन्वयक सर्वश्री ओमप्रकाश वर्मा, चम्पेश्वर साहू, प्रतुल वैष्णव, सरपंच चूनाराम नायक, नंदकिशोर सुरजन, जयप्रकाश सिन्हा, प्रभात साहू, चतुरराम देवांगन, छोटूराम साहू, होरीलाल साहू आदि गणमान्य कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

तीन माह में 2000 पौधों का रोपण किया

सोरिद, धमतरी। छत्तीसगढ़

जन्माष्टमी के पावन पर्व पर धमतरी के सोरिद नगर में श्री राम स्मृति वन विस्तार योजना के अंतर्गत हाई स्कूल एवं प्राथमिक विद्यालय परिसर में वृहद वृक्षारोपण किया गया। धमतरी के महापौर विजय देवांगन की मुख्य उपस्थिति में अशोक, नीलगिरी, गुलमोहर एवं अन्य लगभग 100 उपयोगी पौधे लगाए गए। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में सोरिद इकाई के वरिष्ठ परिजन, महिला मण्डल के सदस्य गण, वार्ड वासियों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ शाला के शिक्षक और स्काउट्स ने भी भरपूर सहयोग किया।

गायत्री परिवार की ओर से श्री दिलीप नाग ने बताया कि गायत्री परिवार ने इस वर्ष अभी तक जिले भर में लगभग दो हजार पौधे लगाए हैं। उन्होंने इस वर्ष 5000 पौधे लगाने का संकल्प दोहराया।

लिलुआ, हावड़ा। प. बंगाल

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर हावड़ा के निकट एस. एण्ड टी. ट्रेनिंग सेंटर, पूर्व रेलवे, लिलुआ में वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण जागरूकता का कार्यक्रम रखा गया। प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य, शिक्षक एवं प्रशिक्षकों के सहयोग एवं उपस्थिति में यह कार्यक्रम अत्यंत आत्मीयता एवं उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ।

अखण्ड दीप के समक्ष हर वर्ष होते हैं 24-24 लाख गायत्री महामंत्र जप

हटा। मध्य प्रदेश : युगऋषि के प्राणवान प्रज्ञापुत्र डॉ. सी एल नेमा (एम.डी.) के विशेष प्रयासों से हटा की चैतन्य पूजा साधना स्थली में गुरुपूर्णिमा, सन् 2000 से अखंड दीप प्रज्वलित है। डॉ. नेमा लोगों को अखण्ड दीप के सान्निध्य में साधना से व्यक्तित्व को निखारने की सतत प्रेरणा देते रहे हैं। अखण्ड दीप की स्थापना से पूर्व भी घर-घर प्रतिदिन 6 घण्टे की साधना के माध्यम से 24 लाख गायत्री महामंत्र जप साधना पुरश्चरण सम्पन्न किया था। इस दीप को जन्म शताब्दी वर्ष-2026 तक इसी प्रकार अखण्ड प्रज्वलित रखकर अधिक से अधिक लोगों को साधना, संयम, सेवा के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सन् 2021 से 24-24 लाख के 5 पुरश्चरण भी इसी अखंड दीप के साक्षी मे चल रहे हैं।

120 फलदार वृक्षों की पौध लगाई

शासकीय विद्यालय में हुए वृक्षारोपण में विद्यार्थियों की भागीदारी

बैतूल। मध्य प्रदेश : बैतूल जिले में निरंतर चल रहे वृक्षगंगा एवं किसान जागरूकता अभियान के अंतर्गत ग्राम जुआड़ी, विकासखंड घोड़ाडोंगरी में गायत्री परिवार के हिरेंद्र शर्मा की माताजी स्व.शांता देवी शर्मा की स्मृति में बृहद् वृक्षारोपण हुआ।

शासकीय उच्च मा. विद्यालय के विद्यार्थियों ने विद्यालय परिसर में 50 पेड़ों की पौध लगाई। गायत्री शक्तिपीठ बैतूल के ट्रस्टी श्री रोशनलाल पटैया ने शाला के बच्चों को वृक्षारोपण का महत्त्व बताया। ब्लॉक युवा समन्वयक श्री आशीष पटैया ने अपनी शाखा के साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गायत्री परिवार बैतूल द्वारा प्रस्तुत वर्षाकाल में 3000 पौधे रोपे जा चुके हैं।

कृषक सुभाष महतो के खेत में 50 और सुनील वर्मा के खेत में 12 वृक्षों की पौध लगाई गई।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रगतिशील परम्पराओं से प्रेरित होकर सन्मार्ग की ओर अग्रसर हो रहा है समाज

मेला क्षेत्र में प्रस्तुत किया सेवा, स्वच्छता का आदर्श

प्रशासन से मिला सम्मान
30,000 श्रद्धालु लाभान्वित हुए

नाशिक। महाराष्ट्र

नाशिक में गोदावरी नदी के उद्गम ब्रह्मगिरि पर्वत पर हर वर्ष श्रावण मास के तीसरे सोमवार को विशाल मेले का आयोजन होता है। लाखों लोग इस मेले में भाग लेते हैं। गायत्री परिवार की नाशिक शाखा विगत छः वर्षों से इस मेले में कैम्प लगाकर श्रद्धालुओं की सेवा कर रही है और अपने प्रगतिशील विचारों को लोगों तक पहुँचा रही है।

इस वर्ष 3 सितम्बर की सायं से 4 सितम्बर के पूरे दिन गायत्री परिवार ने मेला क्षेत्र में भण्डारे का आयोजन किया। 30,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने इसका लाभ लिया। उनके लिए साबूदाने की खिचड़ी, पूड़ी-सब्जी, चाय इत्यादि की व्यवस्था गायत्री परिवार ने की थी।

शिवभक्तों की सेवा में जुटे गायत्री परिवार के परिजन

मेले में प्रशासन सहित हजारों लोगों ने गायत्री परिवार की सेवाओं को सराहा। विशेष सराहना वहाँ स्वच्छता के लिए किए गए प्रयासों की हुई। मेला क्षेत्र में इतने बड़े भण्डारे में सामान्यतः कूड़े का अम्बार लग जाता है। लेकिन श्री अमृतभाई पटेल के नेतृत्व में सर्वश्री राकेश पटेल और उनके साथी रवि पटेल, गिरीश पटेल, भरतभाई वडोदरिया, निमेश, चिराग, रवीन्द्र, घनश्याम, तुषार आदि 60 युवाओं ने सतत स्वच्छता बनाये रखकर श्रद्धालुओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया, वे स्वच्छता की प्रेरणा देते रहे। स्थानीय प्रशासन ने गायत्री परिवार को इस स्वच्छता के लिए विशेष प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

नशामुक्ति अभियान भी

गायत्री परिवार ने भण्डारे के साथ नशामुक्ति अभियान भी चलाया। श्रद्धालुओं को नशे से होने वाली हानियों की जानकारी देते हुए उन्हें नशा छोड़ने की प्रेरणा दी गई।

सॉफ्ट स्किल के प्रशिक्षण ने सभी को आकर्षित किया

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी के अयोध्या जोन-1 की लखनऊ टीम के द्वारा गायत्री शक्तिपीठ गोमतीनगर लखनऊ में एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें बहराइच, लखीमपुर, बलरामपुर, श्रावस्ती तथा प्रतापगढ़ जिले के कार्यकर्त्ताओं की भागीदारी रही।

कार्यशाला में कुमारी अनामिका शर्मा द्वारा दिया गया सॉफ्ट स्किल से संबंधित प्रशिक्षण इस कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता रही। सॉफ्ट स्किल, अर्थात् मोबाइल तथा जूम ऐप पर गर्भोत्सव की जानकरी सही ढंग से कैसे प्राप्त करें एवं कैसे दी जाए? इस प्रशिक्षण की सभी ने सराहना की। प्रतिभागियों ने कहा कि इस प्रशिक्षण से उन्हें बहुत जानकारियाँ मिली हैं, उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। सभी जिलों के कार्यकर्त्ताओं ने ऑफलाइन प्रायोगिक सत्र के आयोजन का अनुरोध किया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को गति देने में जुटी प्राणवान टोली

शानदार प्रभाव

कार्यशाला से प्रभावित होकर लखीमपुर जिले के श्री राम खिलावन निषाद एवं श्री कृष्ण कांत तिवारी ने अपने जिले में भी दो दिवसीय प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने की घोषणा की।

कार्यशाला में श्री विष्णु पाठक जी, श्रीमती मधु तिवारी, श्रीमती नीलम वर्मा, कुमारी नीलम देवी तथा श्रीमती मंजु मिश्रा ने अपनी-अपनी टीमों के साथ भाग लिया। लखनऊ टीम में श्रीमती रीता सारस्वत, श्री पी.डी. सारस्वत, श्रीमती लक्ष्मी जोशी, श्रीमती ममता श्रीवास्तव एवं श्रीमती अर्चना वर्मा का इसकी सफलता में विशिष्ट योगदान रहा।

फिजूलखर्ची से बचाया, लोकमंगल में लगाया

15 गौशालाओं को सूखा चारा दान एवं मानव सेवा से जुड़े 50 व्यक्तियों का सम्मान

जैतारण, पाली। राजस्थान

जैतारण के मूल निवासी और वर्तमान में हैदराबाद (तेलंगाना) निवासी श्री गोकुलचंद उपाध्याय एवं उनके परिवारी जनों ने दिनांक 13 एवं 14 सितम्बर 2023 को स्व. जवरीलालजी उपाध्याय की पावन स्मृति में अपने कुल देवता एवं पितरों के पूजन के साथ श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया। उन्होंने यह कार्यक्रम अपनी मातृभूमि जैतारण में ही किया था।

श्री गोकुलचंद उपाध्याय परम पूज्य गुरुदेव के विचार एवं युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अत्यंत समर्पित कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। वे अपने हर कार्य से समाज को प्रगतिशील दिशा देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उन्होंने बताया कि उनके परिवारी जनों की योजना थी कि श्रद्धांजलि का यह दो दिवसीय कार्यक्रम परम्परागत रूप से कुँआ के पास टैण्ट लगाकर किया जाए। उन्होंने न केवल सुझाव दिया, बल्कि परिवार को सहमत भी किया कि परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा बताए गए आदर्शों पर चलते हुए हमें परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देना चाहिए। परिवारी जनों से आग्रह किया कि इस कार्यक्रम को नगर में स्थित उनकी जाति के सामुदायिक भवन सिखवाल भवन में ही कराकर टैण्ट आदि में अनावश्यक खर्च होने वाली 4 लाख रुपये की राशि बचाई जा सकती है। यह बड़ी राशि लोकमंगल के कार्यों में लगाई जा सकती है।

युगऋषि के आदर्शों के प्रति समर्पित उपाध्याय परिवार के सदस्यगण

प्रयास अत्यंत प्रभावशाली रहे। श्री मदनलाल मैनादेवी उपाध्याय परिवार द्वारा आयोजित इस श्रद्धांजलि समारोह में प्रथम दिन हरिनाम संकीर्तन तथा द्वितीय दिन पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ गौसेवा एवं मानव सेवा के कार्यक्रम भी जोड़े गए। जैतारण क्षेत्र की लगभग 15 गौशालाओं को गो-ग्रास के रूप में दो-दो ट्रेक्टर ट्रॉली सूखे चारे का दान किया गया। मानव सेवा में संलग्न 5 संस्थाओं के लगभग 50 प्रतिनिधियों का स्वागत, सम्मान करते हुए उन्हें आर्थिक अनुदान दिया गया। इस प्रगतिशील प्रेरणादायी कार्यक्रम में श्री गोकुलचंद जी को उनके भाई-भतीजों एवं परिवारी जनों के साथ समस्त नोलकी वाला परिवार जैतारण का हार्दिक सहयोग मिला।

नारी सशक्तीकरण की प्रेरणा हैं श्रीमती जसवीर कौर

टाटानगर। झारखण्ड

सन् 1990 में हरिद्वार भ्रमण पर आई एक सिख महिला श्रीमती जसवीर कौर ने जब शान्तिकुञ्ज देखा, समझा, जाना तो उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनका जीवन ही बदल गया। वे पर्यटक के रूप में आई थीं, परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की पुत्री बनकर लौटीं। वर्तमान में वे प्रज्ञा महिला मंडल टाटानगर की अध्यक्ष के रूप में युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े बड़े-बड़े दायित्व निभा रही हैं।

श्रीमती जसवीर कौर नगर के कई सामाजिक संगठनों से जुड़ी एक प्रतिष्ठित महिला हैं। यह प्रतिष्ठा उन्होंने अपने पद, पैसे के बल पर नहीं, बल्कि कठिन परिश्रम और अद्वितीय सक्रियता के आधार पर प्राप्त की है। समाजोत्थान की हूक, अपनी विनम्रता, सादगी, सेवाभावना के कारण वे हर समाज में बहुत लोकप्रिय है। राष्ट्रीय महिला संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन जैसे अनेक सामाजिक संगठनों ने उन्हें महत्त्वपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित किया है। उनके बीच वे पूज्य गुरुदेव के युग निर्माणी सूत्रों के आधार पर समाज को प्रगतिशीलता की ओर ले जाने का बहुत बड़ा कार्य कर रही हैं।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति अनन्य भाव से समर्पित श्रीमती जसवीर कौर कई सामाजिक संगठनों में महत्त्वपूर्ण पदों को सँभालते हुए युग चेतना का व्यापक विस्तार कर रही हैं।

श्रीमती कौर मिशन की जमीन से जुड़ी स्वयंसेविका हैं। उन्होंने युगशिल्पी सत्र/परिव्राजक सत्र से लेकर शान्तिकुञ्ज के कई सत्रों में भाग लिया। अपने क्षेत्र के 5 से लेकर 251 कुण्ड के यज्ञीय आयोजनों में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान और उनकी सक्रिय भूमिका दिखाई देती है। पंजाब के जालंधर व लुधियाना तथा बिहार के पटना में जोनल महिला समन्वयक और सासाराम शक्तिपीठ पर उपजोन समन्वयक के रूप में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा। उन्होंने टाटानगर गायत्री शक्तिपीठ की सहायक प्रबंधक ट्रस्टी तथा टाटानगर उपजोन की संगठन प्रभारी जैसे दायित्वों का बड़ी कुशलता के साथ निर्वहन किया। उनका सक्रिय सहयोग गायत्री परिवार टाटानगर को महिला सशक्तीकरण अभियान को गति देने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

43 वाँ ऋषि पंचमी समारोह

साली टांडा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

तहसील राजपुरा की ग्राम पंचायत साली टांडा निवासी गायत्री परिवार के कर्मयोगी वनवासी संत स्व. डेमनिया बाबा की कर्मभूमि पर हर वर्ष ऋषि पंचमी पर विशाल संस्कार समारोह होता है। इसमें सैकड़ों मील की पैदल यात्रा कर आए हजारों वनवासी नर-नारी भाग लेते हैं और ऋषि परंपरा का अनुसरण करते हुए यज्ञोपवीत परिवर्तन, गायत्री की दीक्षा और युगऋषि की सत्प्रेरणाएँ हृदयंगम करते हैं।

दीक्षा, यज्ञोपवीत परिवर्तन समारोह में 3000 वनवासियों की भागीदारी

इस वर्ष 18 सितम्बर को सायं दीपयज्ञ के साथ ऋषि पंचमी महोत्सव का शुभारंभ हुआ। शान्तिकुञ्ज से श्री पूरन चंद्राकर की टोली ने वनवासियों की आस्था का पोषण करते हुए गुरुगरिमा का गुणगान किया। गीत और प्रवचनों के माध्यम से नशामुक्ति की प्रबल प्रेरणाएँ दी गईं। स्व. डेमनिया बाबा की टोली के स्थानीय गायक ज्ञानेश्वर भाई जाधव और प्रताप भाई, ज्ञान प्रकाश डावर, फूल सिंह डावर का विशेष योगदान रहा।

19 सितम्बर को मुख्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें दस विधि स्नान, हेमाद्रि संकल्प, यज्ञोपवीत परिवर्तन, दीक्षा संस्कार, नए लोगों द्वारा यज्ञोपवीत धारण जैसे संस्कार सम्पन्न कराए गए। लगभग 3000 लोगों की इस संस्कार समारोह में भागीदारी रही। हजारों लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। संस्कारोपरांत पंच कुंडीय यज्ञ हुआ, भोजन प्रसाद के साथ सभी को विदाई दी गई।

पाँच कुण्डीय गौपुष्टी महायज्ञ

जालोर। राजस्थान

जालोर के निकटवर्ती जुजानी गाँव की जागेश्वर गौशाला में 10 सितम्बर 2023 को गौ-पुष्टि यज्ञ, गौ पूजन सहित गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। गायत्री परिवार की ओर से श्री हरिकृष्ण द्विवेदी ने याजकों को समाज, संस्कृति और सम्पूर्ण विश्व में संतुलन स्थापित करने में गाय के योगदान की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देते हुए सभी को गौसेवा के लिए प्रोत्साहित किया। गौघृत से यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है, इसलिए सभी को नित्यप्रति गौघृत से यज्ञ करना चाहिए।

श्री महेश व्यास ने गोहत्या को प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकंप,अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि का कारण बताया और कहा कि इन विकृतियों के शमन हेतु ही गौपुष्टि महायज्ञ का विधान है। इस अवसर पर गायत्री परिजनों और ग्रामवासियों ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ में आहुतियाँ देकर सर्वत्र सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। सर्वश्री कोलचन्द सोनी, मानाराम पुरोहित, मोडसिंह, पूर्व सरपंच वरदाराम चौधरी अनेक गणमान्य, ग्रामवासियों ने यज्ञ में भाग लिया।

चिकित्सालय आरंभ

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट पर अंशकालिक चिकित्सालय का शुभारंभ किया गया है। 50 वर्षों के अनुभवी चिकित्सक डॉ. आराम पटेल बीएएमएस इसके लिए अपनी भावभरी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। शक्तिपीठ व्यवस्थापक डॉ. शिवनारायण सक्सेना ने डॉ. पटेल का तिलक और देवपूजन कर चिकित्सालय का शुभारंभ किया। डॉ. पटेल शक्तिपीठ पर प्रत्येक रविवार को प्रातः 9 से 11 बजे तक सेवाएँ प्रदान करेंगे।

गायत्री शक्तिपीठ जोबट नेत्रदान, स्वच्छता अभियान, नशामुक्ति, शिक्षा जैसे मानव सेवा के अनेक कार्यक्रमों में सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है।

जो मनुष्य अपना पुरुषार्थ बढ़ाते हैं और अपने आपको ईश्वर की भक्ति से पवित्र बनाते हैं, उनके सब दोष दूर होते हैं। - अथर्ववेद 18/3/17

पर्वों के प्रकाश में बच्चों के उत्थान के प्रयास

बच्चों में आध्यात्मिक चेतना और पर्यावरण संरक्षण की भावना जगाई

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा में गणेश प्रतिमा बनाने का प्रशिक्षण लेते बच्चे

मोडासा, अरावल्ली। गुजरात

प्रसन्नता की बात है कि गणेश चतुर्थी पर्व की बढ़ती लोकप्रियता के साथ लोगों में पर्यावरण संरक्षण की भावना भी जाग्रत् हो रही है। गायत्री चेतना केन्द्र, मोडासा ने इस दिशा में प्रेरक योगदान दिया। मोडासा की कन्या किशोर कौशल अभियान की टीम द्वारा केन्द्र पर किशोर उम्र के बच्चों को शुद्ध मिट्टी से गणेश प्रतिमा बनाना सिखाया गया।

गायत्री चेतना केन्द्र पर बच्चों की अलग-अलग टीमों द्वारा कुल 27 मूर्तियाँ बनाई गईं। बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने उन मूर्तियों का पूजन किया। इसके बाद उन्हें बच्चे अपने घर ले गए और आत्मीयता एवं उत्साह से भरे अंतःकरण के साथ पावन गणेशोत्सव मनाया। पूरी योजना एवं प्रशिक्षण में विलासिनीबेन पटेल, हेमंतभाई पटेल, पंकजभाई प्रजापति, समीरभाई पटेल, तेजस पटेल, घनश्यामभाई उपाध्याय, प्रीतिबेन कडिया, जिमी पटेल आदि के प्रमुख प्रयास रहे।

शिक्षकों ने ही दिलाई है विद्यालय को विशिष्ट पहचान - श्री बृजकिशोर सुरजन

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ में आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों द्वारा मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। गायत्री शिक्षण समिति द्वारा शिक्षकों को विविध क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया।

गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष बृजकिशोर सुरजन ने इस अवसर पर शिक्षकों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षकों के योगदान का वर्णन जितना किया जाए उतना ही कम है। इस विद्यालय की पहचान शिक्षकों से ही है, आप सभी अपने कर्त्तव्य के प्रति ईमानदार हैं। आपके त्याग व समर्पण का भाव ही इस विद्यालय को अपनी अलग पहचान दिलाता है। गायत्री शिक्षण समिति के कोषाध्यक्ष श्री सूर्यकान्त चितलांग्या, सचिव श्री गगन लड्ढा, संरक्षक श्री नंदकिशोर सुरजन सहित समस्त विश्वविद्यालय परिवार इस अवसर पर उपस्थित था।

संस्कृत दिवस मनाया

राजनांदगाँव के गायत्री विद्यापीठ सीजी अंग्रेजी माध्यम ने 29 अगस्त को 'संस्कृत दिवस' मनाया। इसमें कक्षा 6 से कक्षा 12वीं तक के विद्यार्थियों द्वारा कई कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा की गौरव गाथा गाई। बच्चों ने सभी संवाद संस्कृत भाषा में ही प्रस्तुत किये। शिक्षिका श्रीमती संगीता गुप्ता व वहीदा रहमान ने इसकी तैयारियाँ कराई थीं।

मंत्रोच्चार युक्त नृत्य द्वारा बच्चों को वैदिक संस्कृति से जोड़ने का सुन्दर प्रयास हुआ। नाटक तपोदत्त ने बताया कि बिना गुरू के ज्ञान की प्राप्ति असंभव है। विभिन्न परिधानों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की झलक मिली। गीता उपदेश के मंचन ने कुरूक्षेत्र का जीवंत चित्रण किया। सभी शिक्षक, प्रबंधक, गणमान्यों ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया, शुभकामनाएँ दीं।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया

चुनौतियों का सामना करने का हौसला बढ़ाया

बैंगलुरू। कर्नाटक

गायत्री चेतना केंद्र बैंगलुरु में पूर्ण महायोगी श्री कृष्ण का जन्मोत्सव पर्व जन्माष्टमी अत्यंत उत्साह और आनंद के साथ मनाया गया। श्री प्रीतम जेना ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की जिम्मेदारी बड़ी ईमानदारी के साथ सँभाली। पर्व की प्रेरणाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि भगवान श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन दर्शन ही प्रतिकूलताओं पर उत्साह और दृढ़ विश्वास के साथ विजय पाने की प्रेरणा देने वाला है।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रों के साथ गौ पूजन एवं भगवान कृष्ण के पूजन, अर्चन, वंदन व अभिषेक से हुआ। केन्द्र में रहने वाले प्रज्ञा पुत्रों के द्वारा भगवान श्री कृष्ण के भजन, नृत्य और जीवन दर्शन पर बहुत ही सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई। भगवान कृष्ण को 56 प्रकार के मिष्ठान का भोग समर्पित किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम की सरसता, सफलता का मेरुदंड परस्पर आत्मीयता, सहयोग, सहकार रहा। रजनीश, प्रपन्ना, शुभम, राहुल, दुर्गेश, अनिल, ईशा, उषा कदम, आदित्य देशमुख की टीम ने बड़े उत्साह के साथ विविध जिम्मेदारियाँ सँभालते हुए इसे प्रेरणाप्रद सफलता प्रदान की।

रचनात्मक प्रतियोगिताएँ

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

जन्माष्टमी के पावन उपलक्ष्य में गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव ने बच्चों में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्तिभाव जगाने के प्रशंसनीय प्रयास किये। बालिकाओं के लिए मटकी सजाओ प्रतियोगिता तथा बालकों के लिए मोर पंख, मटकी जैसे भगवान श्रीकृष्ण के प्रिय पदार्थों के साथ उनके बालरूप की चित्रकारी करने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। बच्चों ने फैंसी ड्रेस में मधुर संवादयुक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। श्रीकृष्ण भक्ति के भजन, नृत्य, गायत्री नुक्कड़ नाटकों ने भी दर्शकों का मन मोह लिया। श्रीमती रूपाली गाँधी ने बच्चों को संबोधित करते हुए भगवान श्रीकृष्ण को एक महान गुरु बताया।

गायत्री विद्यापीठ के बच्चों की मनमोहक प्रस्तुति

बाल निर्माण अभियान में पूरे मनोयोग से जुटी हैं ले. कर्नल अनुराधा मलिक

मडगाँव। गोवा

युग निर्माण आन्दोलन के लिए पूरे मनोयोग से समर्पित ले. कर्नल सुश्री अनुराधा मलिक द्वारा रक्षाबंधन से हिन्दी दिवस-14 सितम्बर तक बच्चो में संस्कार और नैतिक मूल्यों के अभिवर्धन हेतु विशेष प्रयास किए गए। इस क्रम में दो कार्यक्रम बालिका आश्रम में तथा एक झुग्गी बस्ती में स्थित स्कूल में किया गया। 8 से 10 मिनट के छोटे-छोटे मौखिक तथा प्रोजेक्टर पर एनिमेटेड वीडियो के माध्यम से अत्यंत प्रेरक कहानियाँ एवं रोचक शिक्षाएँ बच्चों के समक्ष प्रस्तुत

झुग्गी बस्ती के बच्चों के बीच ले. कर्नल अनुराधा मलिक

की गईं। इनके माध्यम से उन्हें श्रम, साहस, बहादुरी आदि का पाठ पढ़ाया गया। बच्चों से साधना भी कराई गई। ले. कर्नल अनुराधा जी गोवा के अधिक से अधिक स्कूल, कॉलेज, अनाथाश्रम और डे केअर सेंटर्स में इस प्रकार के कार्यक्रम कराने के लिए प्रयत्नशील हैं।

नई बाल संस्कार शाला का शुभारंभ हुआ

दुमका। झारखण्ड

विश्वकर्मा जयन्ती पर गायत्री शक्तिपीठ दुमका में नई बाल संस्कार शाला का शुभारंभ हुआ। प्रथम दिन शक्तिपीठ प्रबंधक श्री प्रमोद कुमार के अनुसार बच्चों ने शानदार उत्साह दिखाया, कुल 40 बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। महिला मण्डल

और युवा प्रकोष्ठ के सदस्य इसका संचालन करेंगे।

गणेशोत्सव के माध्यम से विचार क्रान्ति

नशा, पर्यावरण, जल संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ाई

मुम्बई। महाराष्ट्र

बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता आन्दोलन को सशक्त करने के लिए सार्वजनिक गणेशोत्सवों की परम्परा आरंभ की थी। दिया, मुम्बई उसी प्रेरणा को हृदयंगम करते हुए वर्ष 2016 से गणेशोत्सव के माध्यम से युगऋषि के क्रान्तिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

इस वर्ष 2023 में दिया, मुम्बई ने विले पार्ले में 10 से अधिक प्रसिद्ध गणेश मंडलों में सद्वाक्यों की स्थापना की। इन पाण्डालों में पर्यावरण, नशामुक्ति, जल संरक्षण और वृक्षारोपण जैसे समसामयिक

गणेश पाण्डालों में लगाए गए सद्वाक्यों के बैनर

और समाज सुधार से जुड़े विषयों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हृदयस्पर्शी सद्वाक्य लगाये गए। लोगों को मुम्बई में सम्पन्न होने जा रहे अश्वमेध यज्ञ की सूचना भी इन पाण्डालों के माध्यम से दी गई। संगीता तिवारी और उनकी टीम का इस कार्य में अग्रणी योगदान रहा। विभिन्न गणेश मंडलों के आयोजकों को युगसाहित्य भी वितरित किया गया।

केन्द्रीय कारागार में बंदी पुरोहितों ने किया नौ कुण्डीय यज्ञ का संचालन

यज्ञ संचालन करते बंदीगण

नर्मदापुरम। मध्य प्रदेश

13 सितम्बर 2023 को केन्द्रीय कारागार नर्मदापुरम में नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुस्तकालय की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार नर्मदापुरम द्वारा चलाए जा रहे बंदी साधना अभियान के अंतर्गत किया गया यह 79वाँ कार्यक्रम था। अभियान संयोजक श्री प्रेमलाल कुशवाहा ने बताया कि यह कई मायनों में अद्भुत था। एक ओर 9 यज्ञ कुण्डों पर तमाम बंदीगण यज्ञ कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर कुछ बंदी पुरोहित के रूप में पीले दुपट्टे पहने यज्ञ का संचालन कर रहे थे। कारा अधीक्षक ने बंदियों के साथ बैठकर यज्ञ भी किया, जिससे बंदी साधकों और बंदी पुरोहितों का काफी उत्साहवर्धन हुआ।

तीन पारी यज्ञ हुआ। सभी बंदियों ने आत्मसुधार की उमंग और माँ भगवती गायत्री से सद्बुद्धि पाने की प्रार्थना के साथ महामंत्र गायत्री से यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं। सुरेश श्रीवास्तव, मीना श्रीवास्तव और प्रेम लाल ने प्रज्ञा संगीत प्रस्तुत किया, जिस पर बंदीगण खूब झूमे।

प्रज्ञा पुस्तकालय की स्थापना

यज्ञोपरांत गायत्री परिवार द्वारा कारा परिसर में प्रज्ञा पुस्तकालय की स्थापना की गई, जिसका पूजन कारा अधीक्षक श्री संतोष सोलंकी और कारा उपाधीक्षक श्री योगेश शर्मा द्वारा किया गया। पुस्तकालय में युगऋषि के समस्त 78 वाङ्मय खंडों की स्थापना की गई है।

सम्मान : गायत्री परिवार ने कारागार प्रशासन को मिट्टी से बनी ईको फ्रैण्डली गणेश प्रतिमा और आटे के बने 4000 दीपक भेंट किए। कारा अधीक्षक ने इसके लिए गायत्री परिवार का आभार व्यक्त किया। उन्होंने बंदियों द्वारा लिखी गई गायत्री मंत्र की पुस्तिकाओं के बंडल भी सौंपे।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री रवीन्द्र वर्मा, अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड

अपने जीवन के पल-पल को गुरुचेतना के साथ विलीन कर जीवन जीने वाले श्री रवीन्द्र वर्मा जी का 20 सितम्बर 2023 को देहावसान हो गया। वे क्षेत्र के सबसे पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। वे सन् 1949 से अखंड ज्योति के नियमित ग्राहक रहे। उन्होंने सन् 1958 में मथुरा के ऐतिहासिक सहस्र कुण्डीय गायत्री महायज्ञ से लेकर बहुत सारे अश्वमेध यज्ञों में भागीदारी की।

श्री रविन्द्र वर्मा जी परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा उनको लिखे गए ढेरों पत्र दिखाया करते थे। वे कहते थे कि मेरे लिए तो पूज्य गुरुदेव ही डॉक्टर हैं, वे ही न्यायाधीश हैं। घर-परिवार में कोई स्वास्थ्य या अन्य समस्या हुई तो गुरुदेव ही उसका समाधान करते थे।

श्री वासुदेव आचार्य, मेडता सिटी, नागौर। राजस्थान

गायत्री परिवार मेड़ता सिटी के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री वासुदेव आचार्य का देहावसान हो गया। वे नागौर जिले के ही आलनियावास के रहने वाले थे।

विवेकशील के लिए कीचड़ में पड़े रत्न भी संग्रहणीय हैं। वे कीचड़ में पड़े होने से उसे अस्पृश्य नहीं मानते। -हरिओम

जन्मशताब्दी वर्ष का प्रयाज : भावनाशील क्षेत्रों में तलाशे और तराशे जा रहे हैं युगशिल्पी

जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

गाँव-गाँव कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण की योजना बनी

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर में 9 से 11 सितंबर तक जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें अलीराजपुर, जोबट, चन्द्रशेखर आजाद नगर, कट्ठीवाड़ा और सोण्डवा तहसीलों के 45 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। मुख्य प्रशिक्षक श्री विक्रम सिंह पाटीदार एवं श्री सत्यनारायण शर्मा ने संस्कार, संगीत एवं बौद्धिक योग्यता संवर्धन के लिए अथक परिश्रम किया। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं को सार्वजनिक कार्यक्रमों के संचालन में अपनाई जाने वाली परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताई गई आदर्श आचार संहिता की जानकारी दी और उसका निष्ठापूर्वक पालन करने का निर्देश दिया।

जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा ने बताया कि प्रयास प्रभावशाली रहे। सभी

अलीराजपुर के शिविर में भाग लेने वाले भाई-बहिन

शिविरार्थियों ने अपने गाँव के युवाओं को और गायत्री परिवार के अन्य कार्यकर्त्ताओं को इसी प्रकार का प्रशिक्षण देते हुए नए कार्यकर्त्ता तैयार करने का आश्वासन दिया।

शक्तिपीठ के वरिष्ठ परिजन श्री पुरुषोत्तम करमदिया ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को एक झोला, पीला दुपट्टा, यज्ञ की पुस्तक, काष्ठपात्र का सेट दिया। ट्रस्टी श्री रणछोड़ राठौड़, श्री जगदीश राठौड़, श्री रतनलाल माली, श्री भूरसिंह भिण्डे ने सभी को प्रमाण पत्र दिये।

वनवासी क्षेत्र में अभिनव समाज की संरचना का उत्साह

छत्तीसगढ़ के हर जिले में आयोजित हो रहे हैं कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

दन्तेवाडा। छत्तीसगढ़

दिनांक 5 सितम्बर से गायत्री शक्तिपीठ दंतेवाड़ा में पाँच दिवसीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आरंभ हुआ। इस सुदूर वनवासी क्षेत्र को कार्यकर्त्ताओं के समर्पण और भावनाओं के कारण परम पूज्य गुरुदेव के हृदय के रूप में माना जाता है। इसी मान्यता के अनुरूप कृषिकार्यों में व्यस्तता होने के बावजूद क्षेत्र के 150 कार्यकर्त्ताओं ने शिविर में भाग लिया।

मुख्य प्रशिक्षक के रूप में छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर उपस्थित थे। प्रशिक्षित भाइयों की 6 और बहिनों की 9 टोलियाँ बनीं। यह शिविर कार्यकर्त्ताओं में जबरदस्त प्राणसंचार करने में सफल रहा।

सुकमा शक्तिपीठ प्रतिनिधि श्री आयताराम पोडयाम एवं जगदलपुर के श्री लेखराम साहू ने अपने क्षेत्र में आगामी दिनों

दन्तेवाड़ा में चल रहा प्रशिक्षण शिविर

होने जा रहे 108 कुण्डीय यज्ञ के प्रयाज कार्यों के संबंध में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, ताकि घर-घर निमंत्रण पहुँचाया जा सके। विदाई से पूर्व सभी प्रशिक्षित परिजनों ने इन यज्ञों के लिए समयदान के संकल्प लिए।

गायत्री शक्तिपीठ दंतेवाड़ा द्वारा संचालित गायत्री विद्यापीठ में ज्ञानदीक्षा संस्कार महोत्सव का आयोजन किया गया। यह भी एक प्रशिक्षण ही था। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने में इस संस्कार की महत्ता सुनकर सभी अभिभूत हुए।

अंतिम दिन सबने मिलकर पूरे नगर में बड़ी आकर्षक प्रभातफेरी निकाली।

कोरबा। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ कोरबा में दिनांक 21 से 25 अगस्त तक की तिथियों में लगभग 110 सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें परम वंदनीया माता जी की जन्म शताब्दी 2026 की पूर्व तैयारी एवं कुसमुंडा(कोरबा) में होने जा रहे 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की तैयारी हेतु पूरे जिले में ग्राम प्रशिक्षण, देव स्थापना, वृक्षारोपण एवं घर-घर संस्कार यज्ञ के लिए कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया। गायत्री विद्यापीठ कोरबा एवं सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास पर प्रबोधन भी दिया गया।

यौवन माँ भारती की अमानत है, इसे राष्ट्र-निर्माण में लगाएँ

युवा जागरण और नशा उन्मूलन कार्यशाला

कन्नौद, देवास। मध्य प्रदेश

कन्नौद के खेड़ापति गार्डन में आयोजित युवा जागरण एवं नशा उन्मूलन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए देवास जिला युवा समन्वयक श्री प्रमोद निहाले ने युवाओं को राष्ट्र का पर्याय बताया। उन्होंने कहा कि युग के नवनिर्माण के लिए श्रेष्ठ युवाओं को गढ़ने की आवश्यकता है। युवा उत्थान के बिना श्रेष्ठ भारत की कल्पना संभव नहीं है। उन्होंने आह्वान किया कि जवानी माँ भारती की अमानत है, इसे माँ भारती के चरणों में समर्पित करें।

कार्यशाला में अनेक वक्ताओं द्वारा जीवन जीने की कला, नशा उन्मूलन, शिक्षा एवं विद्या जैसे विषयों पर विस्तृत परिचर्चा की गई। 265 बच्चों के साथ लगभग 400 लोगों ने कार्यशाला में भाग लिया ।

द संस्कार वेली हाई स्कूल कन्नौद की संचालक श्रीमती बीना यादव, न्यू डिजिटल इंस्टीट्यूट कन्नौद के संचालक श्री गौरव श्रीवास्तव एवं श्री राहुल परमार, श्री सृजन कॉन्वेंट स्कूल के शिक्षक श्री अरुण कुमार सिंह आदि ने इस कार्यशाला की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने भारतीय संस्कृति के उत्थान के लिए पुनः ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का संकल्प व्यक्त किया।

कन्नौद में सामाजिक कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता और नशामुक्ति का संकल्प लेते विद्यार्थी

दिया, छत्तीसगढ़ द्वारा महाविद्यालयों में डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन

जाँजगीर चाँपा में आयोजित कार्यशाला

जामगाँव, दुर्ग के महाविद्यालय में विद्यार्थियों को नैतिकता का पाठ पढ़ाती बहिन

जाँजगीर चाँपा। छत्तीसगढ़

दिव्य भारत युवा संघ (दिया) छत्तीसगढ़ की कोरबा ईकाई ने 16 सितंबर 2023 को जांजगीर जिले के सारा गाँव के शासकीय नवीन महाविद्यालय एवं जे.डी .एस. शा. उ.मा.विद्यालय में डिवाइन वर्कशॉप आयोजित की। कुल 380 युवाओं ने इसमें भाग लिया। मुख्य वक्ता श्री कन्हैया चौहान ने कहा कि युवा शक्ति राष्ट्र की शक्ति है, इसे सकारात्मक दिशा में प्रेरित करने की आवश्यकता है। कोरबा से आए दिया टीम के प्रशिक्षक विजेंद्र यादव, खिलावन पटेल, सविता साहू, वरुण गुप्ता, विहान सिंह ने कई रोचक उदाहरण एवं महापुरुषों की सफलता की कहानियों के माध्यम से युवा कौन? युवा अपने व्यक्तित्व को कैसे निखारें? पर्यावरण संरक्षण वर्तमान की आवश्यकता आदि प्रमुख विषयों को इस वर्कशॉप में प्रस्तुत किया।

जामगाँव, दुर्ग। छत्तीसगढ़

दिया, छत्तीसगढ़ ने दिनाँक 14 सितम्बर 2023 को शासकीय महाविद्यालय जामगाँव (आर) और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भरर में व्यक्तित्व परिष्कार कार्यशाला का आयोजन किया। दिया के प्रांतीय संयोजक डॉ. पी. एल साव ने युवाओं को साधना प्रधान जीवन शैली को अपनाते हुए अपने समय और प्रतिभा के सुनियोजन से जीवन में बेहतर सफलता के सूत्र समझाये।

श्रीमती अनीता साव ने प्रेरणाप्रद कहानियों के माध्यम से संकल्प और संघर्ष की प्रेरणा दी। डॉ. योगेन्द्र कुमार और इं. युगल किशोर ने नशा-कुरीतियों से बचने का आह्वान किया। शासकीय महाविद्यालय जामगाँव (आर) के एन.एस.एस. प्रभारी श्रीमती चेतना सोनी ने इसकी सफलता में मुख्य भूमिका निभाई। 450 से अधिक युवाओं ने इस कार्यशाला का लाभ उठाया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को प्रोत्साहित करते विविध कार्यक्रम

महिला आई .टी .आई . की भागीदारी

गुरुग्राम। हरियाणा : गायत्री परिवार द्वारा दिनांक 15 सितंबर 2023 को महिला आई.टी.आई. सेक्टर-14, गुरुग्राम हरियाणा में दो कार्यशालाओं का आयोजन कर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की विस्तृत जानकारी प्रदान की और सभी छात्रों से इसमें भाग लेकर अपनी सांस्कृतिक चेतना के विकास की प्रेरणा दी। संस्थान के प्रधानाध्यापक ने शानदार सहयोग देते हुए इस परीक्षा में अपने विद्यार्थियों की भागीदारी को अनिवार्य किया। शिक्षा विभाग ने भी इन सभी सरकारी संस्थाओं में निःशुल्क परीक्षा का निर्देश दिया है, अतः निःशुल्क पाठ्य सामग्री वितरित की गई।

शिक्षक गरिमा शिविर में व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहन

नाशिक। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार नाशिक ने 26 अगस्त को पंचवटी क्षेत्र में शिक्षक गरिमा शिविर का आयोजन किया, जिसमें 450 शिक्षकों ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज से महाराष्ट्र जोन प्रभारी श्री शरद पारधी, श्री सुधीर फणसे तथा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा समन्वयक श्री रामयश तिवारी, श्री सी.डी. थपलियाल की टोली पहुँची थी। महाराष्ट्र में भासंज्ञाप. प्रभारी श्री शंकरलाल भावरकर ने भी शिविर को संबोधित किया। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने शिक्षा को व्यावसायिक न बनाकर संस्कारयुक्त बनाने की प्रेरणा दी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपना वीडियो संदेश भेजा था, जिसके द्वारा उन्होंने राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की भूमिका पर हृदयस्पर्शी वक्तव्य दिया।

शिविर को सफल बनाने में डांग सेवा मंडल नाशिक की अध्यक्ष सुश्री हेमलता बिड़कर, स्नेह बंधन सोसायटी की अध्यक्ष श्रीमती कलावती चौहान एवं कई स्कूलों के शिक्षकों का विशिष्ट योगदान रहा। गायत्री परिवार के श्री अमृतभाई पटेल, श्री एम.एम. सोनवणे, श्री जयंतभाई नायी सक्रिय रहे।

50 शिक्षक, शिक्षिकाओं का सम्मान समारोह

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार मुजगहन द्वारा गायत्री प्रज्ञा पीठ में शिक्षक सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत मुजगहन के हायर सेकंडरी स्कूल, मिडिल स्कूल, तीन प्राथमिक शाला, तीन आंगनबाड़ी केंद्र एवं ग्राम के वरिष्ठ सेवा निवृत्त 50 शिक्षक-शिक्षिकाओं का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि चन्द्रहास सिन्हा ने कहा कि आज विद्यार्थियों को शिक्षा देने के साथ संस्कारवान बनाने की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। शिक्षकों का यह नैतिक दायित्व भी है। समाज से सम्मान प्राप्त होने पर शिक्षकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

विशिष्ट अतिथि राज्य पाल पुरस्कृत शिक्षक श्री दीनबंधु सिन्हा ने कहा कि शिक्षक बनना सरल है, लेकिन शिक्षक धर्म निभाने के लिए उन्हें अपने व्यक्तित्व से

आदर्श प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। कई अन्य वक्ताओं ने भी महत्त्वपूर्ण प्रेरणाएँ दीं।

सम्मानित किए गए शिक्षकों को गायत्री परिवार के ओर से गायत्री मंत्र दुपट्टा, माला, श्रीफल, पेन एवं गुरुदेव का साहित्य भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री दिलीप नाग ने एवं आभार प्रदर्शन प्रज्ञा पीठ के संचालक राधेश्याम साहू ने किया।

सब पापों को छोड़ो। अच्छे गुणों का सम्पादन करो। अच्छे विचारों को धारण करो। यही बुद्ध की शिक्षा है। -बुद्ध बग्गी

नशामुक्त भारत अभियान के लिए भारत सरकार के साथ एमओयू

देवभूमि भारत के 15 प्रतिशत युवाओं का नशाग्रस्त होना दुर्भाग्यपूर्ण है।

- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि

अपने भटके भाइयों को सही राह पर लाएगा गायत्री परिवार

नशामुक्त भारत अभियान को सफल बनाने के लिए प्रतिबद्धता की शपथ दिलाते माननीय मंत्री जी और आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी अखिल विश्व गायत्री परिवार ने अपने नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत समाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, भारत सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) किया। यह एमओयू 22 सितम्बर 2023 के दिन नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम के माध्यम से सम्पन्न हुआ। डॉ. वीरेन्द्र कुमार, माननीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री, भारत सरकार एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने नशामुक्ति के लिए भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए माननीय मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया और यह अभियान सफल हो ऐसी शुभकामना की। मुख्य अतिथि माननीय मंत्री जी ने नशे को युवाओं के विवेक और उनके सामर्थ्य को क्षीण करने वाली बहुत बड़ी बाधा बताया।

इस अवसर पर पूरे एनसीआर क्षेत्र तथा देश के विभिन्न राज्यों से आए हजारों कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने 'नशामुक्त भारत' अभियान को युगधर्म मानते हुए उसके प्रति निष्ठावान रहने की शपथ दिलाई।

यज्ञ की देवदक्षिणा से बदल रहा है समाज

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा आरंभ की गई यज्ञ में नशा-दुष्प्रवृत्तियों की देवदक्षिणा को माँगने की परंपरा का स्मरण किया। सन् 1951 की एक घटना भी सुनाई जिसमें मध्य प्रदेश के एक गाँव में नन्हें बच्चों ने यज्ञ के बाद घर-घर जाकर नशे की देवदक्षिणा माँग कर पूरे गाँव को नशामुक्त कर दिया था।

अवतार, तीर्थंकर, गुरुओं के देश का यह दुर्भाग्य क्यों?

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने संबोधन में एक ज्वलंत प्रश्न किया कि क्या यह सामूहिक दुर्भाग्य का विषय नहीं है कि जिस देश को स्वामी विवेकानन्द ने ज्ञान और विज्ञान की धाराओं का देश बताया, परम पूज्य गुरुदेव ने अध्यात्म की जन्मभूमि और कर्मभूमि कह कर पुकारा, जिस देश में राम, कृष्ण, जैनों के तीर्थंकर, सिक्खों के गुरु आदि असंख्य महापुरुषों के जीवन से निकले प्रकाश का जिसने स्पर्श किया, उसके अंदर की पैशाचिक प्रवृत्तियाँ दैवीय संभावनाओं में बदल गईं। आज इस देश के 15 प्रतिशत युवा नशे से जूझते, अपने जीवन की उम्मीदों को बर्बाद करते दिखाई पड़ते हैं।

विभिन्न गणमान्यों से भेंटवार्ताएँ

माननीया मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी और आईसीसीआर के अध्यक्ष माननीय डॉ. विनय सहस्रबुद्धे जी से महत्त्वपूर्ण चर्चा हुई।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला, डॉ. अमिता बिड़ला, श्रीमती मल्लिका नड्डा से शिष्टाचार भेंट की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने 22 सितम्बर 2023 के दिल्ली के प्रवास में कई गणमान्यों से भेंट कर देव संस्कृति विस्तार के अभियान में उल्लेखनीय सफलताएँ प्राप्त कीं। भारत सरकार के विदेश एवं संस्कृति मंत्रालय की माननीया राज्यमंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी से भेंट हुई। उनके साथ गायत्री परिवार के विभिन्न प्रकल्पों एवं संचालित की जा रही गतिविधियों पर चर्चा हुई।

नई दिल्ली स्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (ICCR) के अध्यक्ष माननीय डॉ. विनय सहस्रबुद्धे जी एवं महानिदेशक श्री कुमार तुहीन जी से भेंट हुई। उनके साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने पर विस्तार से विचार विमर्श हुआ।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जे.पी. नड्डा जी की धर्मपत्नी आदरणीया श्रीमती मल्लिका नड्डा जी से शिष्टाचार भेंट हुई, पूज्य गुरुदेव का स्मृति चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी एवं आदरणीया डॉ. अमिता बिड़ला जी से शिष्टाचार भेंट करने पहुँचे, उन्हें माँ सरस्वती की प्रतिमा भेंट करते हुए राष्ट्रोत्कर्ष के महान उत्तरदायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करने के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

मान. श्रीमती मीनाक्षी लेखी और डॉ. चिन्मय जी

मान. डॉ. विनय सहस्रबुद्धे को साहित्य भेंट

मान. श्री ओम बिड़ला व डॉ. अमिता बिड़ला के संग

श्रीमती मल्लिका नड्डा को साहित्य भेंट करते हुए

एक नैष्ठिक स्वयंसेवक के रूप में शान्तिकुञ्ज, देसंविवि पधारे सिक्किम के राज्यपाल श्री एल.पी. आचार्य

सिक्किम के माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कुमुद देवी व अन्य परिवारीजनों के साथ 20 सितम्बर 2023 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं शान्तिकुञ्ज आए। उन्होंने विवि के महान उद्देश्य तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के साथ बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए चलाई जा रही रचनात्मक गतिविधियों का अध्ययन किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के गौरव को बढ़ाने वाले देसंविवि में स्थापित भारत के प्रथम बाल्टिक सेंटर को भी देखा। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की सक्रियता की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि यह सच्चे अर्थों में युवाओं में जीवन मूल्यों के विकास के लिए संकल्पित संस्थान है।

उल्लेखनीय प्रसंग

माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी सन् 1987 में शान्तिकुञ्ज में एक मासीय युगशिल्पी सत्र कर चुके हैं। एक नैष्ठिक स्वयंसेवक के रूप में उन्होंने कहा कि पूज्य गुरुदेव के विचारों ने मुझे आगे बढ़ने में बहुत मदद की है।

माननीय राज्यपाल श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट करने सपरिवार शान्तिकुञ्ज आए। अत्यंत पारिवारिक आत्मीयता के साथ कई विषयों पर भावभरी चर्चा हुई। श्रद्धेयद्वय ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी को आप जैसी विशिष्ट विभूतियों से बड़ी आशाएँ हैं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी राज्यपाल महोदय को गायत्री माता का चित्र भेंट करते हुए

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया जीजी ने राज्यपाल महोदय को गायत्री माता का चित्र एवं युगसाहित्य भेंट किया। अतिथि महोदय 'अखण्ड दीप' तथा ऋषियुग्म के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' के दर्शन-प्रणाम करते हुए भावविभोर थे।

इससे पूर्व माननीय राज्यपाल जी के देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आगमन पर प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पड्या जी ने पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका आत्मीय स्वागत किया।

वेद विभाग द्वारा प्रकाशित नई पुस्तकें

शान्तिकुञ्ज के वेद विभाग द्वारा हाल ही में सनातन अध्यात्मवाद से संबंधित परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित अत्यंत उपयोगी दो पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है।

1. बहुदेववाद-एक रहस्य

इस पुस्तक में विभिन्न देवी-देवताओं और अवतारों के संबंध में गूढ़ एवं वैज्ञानिक जानकारी दी गई है। यह पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई है। प्रथम भाग का मूल्य- 160/-

2. विविधदेवानां विविधा गायत्री

गायत्री की विभिन्न शक्तियों से संबंधित मंत्र, अर्थ एवं विवेचना सहित एक सौ से अधिक दुर्लभ मंत्रों का संग्रह तथा नवग्रह देवताओं के बीज मंत्र सहित सभी मंत्र इस पुस्तक में दिये गए हैं। मूल्य 20/-

देसंविवि के रोवर, रेंजर्स द्वारा हाइक का आयोजन

सामाजिक जागरूकता बढ़ाने तथा प्राकृतिक जीवन विद्या का अभ्यास कराने का लक्ष्य रहा

भारत स्काउट गाइड देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के रोवर-रेंजर्स ने दिनांक 28 सितंबर को एक पदयात्रा (हाइक) का आयोजन किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर से चंडी देवी मंदिर तक की पदयात्रा में 10 रोवर, 20 रेंजर एवं 5 सदस्यीय स्टाफ के सदस्य शामिल रहे। देसंविवि के स्काउट गाइड समन्वयक श्री राम अवतार पाटीदार ने बताया कि इस पदयात्रा के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के सशक्त प्रयास हुए। देश और समाज को स्वच्छ एवं नशा मुक्त बनाने के लिए अत्यंत प्रभावशाली प्रेरणाएँ दी गईं। प्रतिभागियों ने प्राकृतिक जीवन विद्या का अभ्यास किया। रोवर लीडर मंगलसिंह गढ़वाल, सूर्यनाथ यादव, अंकित तथा रेंजर लीडर गायत्री साहू के मार्गदर्शन में इस हाइक का आयोजन हुआ।

प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते श्री मंगलसिंह गढ़वाल

रेलवे प्रशासन को व्हील चेयर भेंट की

आचार्य पं. श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय, शान्तिकुञ्ज की ओर से हरिद्वार रेलवे प्रशासन को प्रथम चरण में दो व्हील चेयर भेंट की गईं। 25 सितम्बर को शान्तिकुञ्ज की ओर से सर्वश्री संतोष सिंह, सौरभ शर्मा, श्रीराम बन्नाईत, सुरेश कुशवाहा, दीनदयाल जी ने हरिद्वार रेलवे स्टेशन पहुँचकर स्टेशन अधीक्षक श्री दिनेश कुमार को यह व्हील चेअर सौंपीं। रेलवे के सीएमआई श्री अश्विनी जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने इसे जरूरतमंदों की सेवा के लिए किया गया एक छोटा-सा प्रयास बताया। उन्होंने कहा कि कई बार रेलवे स्टेशन पर बीमार, अपाहिज तथा असहाय बुजुर्गों, दिव्यांग जनों को परेशान होते हुए देखा। यदि शान्तिकुञ्ज के सहयोग से उनकी कुछ सेवा होती है तो हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी।

संसार में शासन शक्ति करती है, पर विचार जब शक्ति पर शासन करने लगता है तो मनुष्य भगवान हो जाता है। -स्वामी विवेकानन्द

उत्तराखण्ड के राज्यपाल ले.ज. गुरमीत सिंह (से.नि.) ने
युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए कहा-

आप सब प्रभु के ब्रांड एम्बेसडर हैं।

19 सितंबर 2023 को उत्तराखण्ड के राज्यपाल ले.ज. श्री गुरमीत सिंह (से. नि.) ने युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अपनी अनन्य आस्था दुहराते हुए गायत्री परिवार के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं को प्रभु के ब्रांड एम्बेसडर बताया। प.पू. गुरुदेव को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि महापुरुषों के संकल्प कभी निष्फल नहीं जाते। भारत विकसित, आत्मनिर्भर और विश्वगुरु बनने की दिशा में तेजी से उभर रहा है। भारत ही सारे विश्व का मार्गदर्शन करेगा। इस अवसर पर प्रदेश के वित्त एवं शहरी विकास मंत्री श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा जी भी मंच पर उपस्थित थे।

माननीय राज्यपाल देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युजंय सभागार में अखण्ड दीप एवं वं. माताजी के जन्म शताब्दी समारोह के अंतर्गत शान्तिकुञ्ज में चल रहे सक्रिय कार्यकर्त्ता सम्मेलन के प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। शिविर में उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व पंजाब से आये 2000 से अधिक चयनित कार्यकर्त्ता भाई बहिनों ने भाग लिया।

वियतनामी भाषा में प्रकाशित पुस्तक का विमोचन करते (बायें से) डॉ. ओ.पी. शर्मा, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी, माननीय राज्यपाल एवं कुलपति श्री पारधी जी

- मंचासीन गणमान्यों ने वियतनामी भाषा में अनुवादित पूज्य गुरुदेव की पुस्तकों का विमोचन किया।
- इस समारोह से पूर्व माननीय राज्यपाल एवं मंत्री महोदय देसंविवि स्थित शौर्य की दीवार पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्रहित में अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

राज्यपाल महोदय ने कार्यकर्त्ताओं में समाज और राष्ट्र की सेवा के प्रति आत्मगौरव का भाव जगाया। उन्होंने कहा कि मैं एक सैनिक हूँ, इस पर मुझे गर्व है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने भी गायत्री परिवार के करोड़ों कार्यकर्त्ताओं को सृजन सैनिक के रूप में तैयार किया है। उनका यह तप, पुरुषार्थ समाज में परिवर्तन लाकर रहेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन, देव पूजन, कुलगीत, प्रज्ञागीत के उपरांत विवि. के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अतिथियों का भावभरा स्वागत किया। माननीय मंत्री श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल ने गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के त्यागयुक्त सेवाभावना की सराहना की।

राज्यपाल व वित्त मंत्री को स्मृति चिह्न व युगसाहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, पत्रकार एवं देसंविवि व शान्तिकुञ्ज के आचार्य, विद्यार्थी भी सभा में उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा ने किया।

जब जीवन का सौभाग्य जागता है तब ईश्वरीय कृपा प्राप्त होती है।

- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि.

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि जब व्यक्ति के जीवन में सौभाग्य जागता है, तब उन्हें ईश्वरीय कृपा प्राप्त होती है। जैसे जब नरेन्द्र के जीवन में ईश्वरीय कृपा के रूप में स्वामी रामकृष्ण परमहंस आए तो वे स्वामी विवेकानंद बन गए। उन्होंने कहा कि समाज में बदलाव तभी संभव है, जब समझदार, ईमानदार, प्रामाणिक व्यक्तित्व के धनी लोग आगे बढ़कर निःस्वार्थ भाव से सेवाकार्य में जुटें।

भाद्रपद पूर्णिमा-परम वंदनीया माताजी का महाप्रयाण दिवस

माँ के स्नेहानुदान का स्मरण, भावभरी श्रद्धांजलि

शान्तिकुञ्ज परिवार ने भाद्रपद पूर्णिमा-29 सितम्बर के दिन विराट देव परिवार से जुड़े करोड़ों लोगों की माता स्नेह सलिला परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी का 29वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया। इस उपलक्ष्य में शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों द्वारा शान्तिकुञ्ज के मुख्य सभागार में आयोजित विशेष दीपयज्ञ का संचालन किया गया। भावभरे प्रज्ञागीतों और हृदय से निकले उद्गारों के संग माताजी के असाधारण मातृत्व, कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व को याद किया गया, उन्हें जीवन में आत्मसात करते हुए परम वंदनीया माताजी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने की प्रेरणा दी गई।

आज के समय में नारी सशक्तीकरण की विशेष चर्चा है। परम पूज्य गुरुदेव का 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' उद्घोष चरितार्थ होता दिखाई देता है। लेकिन परम वंदनीया माताजी का जीवन उनके आरंभिक दिनों से ही नारी सशक्तीकरण की जीती-जागती प्रेरणा रहा है। गायत्री तपोभूमि, मथुरा से ही उन्होंने जरूरतमंद और समाज की उपेक्षित महिलाओं को साथ लेकर महिला मण्डल का गठन किया और उन्हें वह सम्मान दिया जिसकी तत्कालीन समाज में कल्पना भी नहीं की जा सकती।

श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब के भावोद्गार

वंदनीया माताजी की प्रेरणा व शक्ति अनुदानों से समाज में स्वर्ग की सृष्टि कर रही हैं देवियाँ

नारी उत्थान के इस अभियान को गति दे रही श्रद्धेया शैल जीजी ने माताजी के पावन जन्म दिवस पर नारी उत्कर्ष की उनकी इन विशेषताओं को विशेष रूप से याद किया। उन्होंने कहा कि यह परम वंदनीया माताजी की प्रेरणा और शक्ति अनुदानों का परिणाम है कि गायत्री परिवार की करोड़ों महिलाएँ न केवल बड़े-बड़े मंचों से पौरोहित्य कर्म सम्पादित करते हुए समाज में नवचेतना का संचार कर रही हैं, बल्कि अपने परिवार में सद्भाव और संस्कारों का संचार कर स्वर्ग की सृष्टि का आधार सिद्ध हो रही हैं।

श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने परम वंदनीया माताजी के नारी जागरण अभियान को मानव में देवत्व जगाने का ऐतिहासिक और महान प्रयोग बताया। उन्होंने कहा कि शान्तिकुञ्ज नारी सशक्तीकरण का जीवंत आदर्श है, जहाँ की हर गतिविधि में ब्रह्मवादिनी बहिनों का अग्रणी योगदान है।

1500 परिजनों ने श्राद्ध किया

भाद्रपद पूर्णिमा से श्राद्ध पक्ष का शुभारंभ भी हुआ। प्रथम दिन शान्तिकुञ्ज के विशाल सभागारों में कुल नौ पारियों में 1500 से अधिक भाई-बहिनों ने अपने पितरों का श्राद्ध-तर्पण कर उनकी शान्ति, सद्गति की भावभरी प्रार्थना की।

पं. शिवप्रसाद मिश्र जी व श्री उदयकिशोर मिश्र सहित संस्कार प्रकोष्ठ के आचार्यों ने श्राद्ध-तर्पण का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया। श्राद्ध कर्म करने वाले सभी परिजनों ने अपनी गुरुमाता परम वंदनीया माताजी को भी उनके महाप्रयाण दिवस पर विशेष श्रद्धांजलि अर्पित की।

शान्तिकुञ्ज में श्राद्ध-तर्पण करते अंतेवासी कार्यकर्त्ता

उत्तर एवं पश्चिमोत्तर जोन के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण सत्र

उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब के 2000 से अधिक सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया

डॉ. ओ.पी. शर्मा जी शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए तथा उत्साहवर्धक शोभायात्रा के साथ हुआ शिविर का समापन

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में दिनांक 16 से 20 सितम्बर 2023 की तिथियों में उत्तर एवं पश्चिमोत्तर जोन के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण सत्र सम्पन्न हुआ। दिनांक 16 सितम्बर को इसके उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए केन्द्रीय जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा जी ने कार्यकर्त्ताओं को अपने व्यक्तित्व को उदारता, सेवा, प्रेम, सहानुभूति आदि सद्गुणों से समृद्ध करने की प्रेरणा दी।

विचार बदलेंगे, तभी समाज बदलेगा।

- डॉ. ओ.पी. शर्मा, जोन समन्वयक

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के लक्ष्य की याद दिलाते हुए उन्होंने युगऋषि के विचारों को हर घर, हर व्यक्ति तक पहुँचा देने की योजना बनाने और निष्ठापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विचार बदलेंगे, तभी समाज बदलेगा। उन्होंने कहा कि एक घर में रहने वाला एक भाई अर्जुन बन जाता है, तो दूसरा दुर्योधन। अंतर मात्र उनकी पात्रता, उनके विश्वास और विचार का है।

जन जागरण शोभायात्रा के साथ भव्य समापन

पाँचवें दिन एक आकर्षक और उत्साहवर्धक शोभायात्रा के साथ सत्र का समापन हुआ। 20 सितम्बर के प्रातःकालीन विदाई सत्र में जलती हुई लाल मशाल की साक्षी में परिजनों को श्रद्धा एवं सक्रियता को बढ़ाने के संकल्प दिलाए गए।

आदरणीय श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी ने विदाई संदेश दिया। उन्होंने अपने पाँच दशक के अधिक समय के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि भगवान के प्रति श्रद्धावान एवं निष्ठावान रहकर भगवान का कार्य करने में ही जीवन की सार्थकता है। सफलता, असफलता की मानसिकता से ऊपर उठकर अपनी गुरुसत्ता के संरक्षण में दृढ़ विश्वास रखते हुए संगठित होकर लक्ष्य की ओर बढ़ते चलेंगे तो समाज में परिवर्तन सुनिश्चित है।

पाँच दिन में कुल बारह सत्र हुए। डॉ. ओ.पी. शर्मा, प्रो. प्रमोद भटनागर, डॉ. गायत्री शर्मा, श्री के.पी. दुबे, श्री श्यामबिहारी दुबे, श्री योगेन्द्र गिरी, श्री नरेन्द्र ठाकुर आदि ने कार्यकर्त्ताओं को प्रमुख रूप से संबोधित किया।

सुसंस्कृत एवं स्वावलंबी हो रही है मातृशक्ति

- आदरणीया शेफाली पण्ड्या

सत्र के तीसरे दिन गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज की प्रबंध समिति की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने सत्र को संबोधित किया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' की याद दिलाते हुए कहा कि नारी सृजन, संवेदना की देवी है। जब नारी 'अबला' मानी जाती थी, तब पूज्य गुरुदेव ने नारियों को गायत्री महामंत्र की दीक्षा देकर जप, तप करने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित किया। आज विशाल आश्वमेधिक यज्ञों सहित विभिन्न यज्ञ, संस्कारों में पौरोहित्य कार्य लाखों बहिनें कर रही हैं।

गायत्री परिवार के विचार क्रान्ति अभियान में मातृशक्ति की अग्रणी भूमिका है। आपके तप और पुरुषार्थ से पूरे विश्व में नारी का गौरव बढ़ रहा है। देवियाँ हर क्षेत्र में समाज और राष्ट्र को ऊँचा उठाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 12.10.2023
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23